सक्सेस मिरर

वर्ष : 7
अंक : 80
सितम्बर : 2016

सफलता का कैप्सूल

Visit us at : www.pdgroup.in

इस अंक में...

6 | कार्य की उत्पत्ति 'विचार में'
8 | समसामयिकी घटना संग्रह
10 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

19 | आर्थिक घटना संग्रह

- केन्द्र सरकार ने 13 सरकारी बैंकों में ₹ 22,915 करोड़ की पूँजी उपलब्ध की
- रेलवे ने कोहरे से निपटने हेतु त्रिनेत्र नामक यन्त्र विकसित किया
- सरकार ने आय घोषणा योजना 2016 के तहत् भुगतान करने हेतु समय सीमा में संशोधन किया

22 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- उत्तर प्रदेश में सातवें वेतनमान के लिए कमेटी के गठन को कैबिनेट की मंजूरी
- भारत का पहला ई-कोर्ट हैदराबाद में आरम्भ
- यूनेस्को ने तीन भारतीय धरोहरों को शामिल करने को मंजूरी प्रदान की

26 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

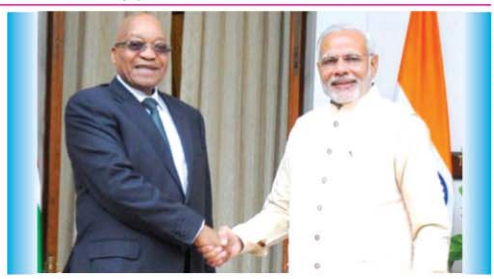

- प्रधानमंत्री मोदी की चार देशों–केन्या, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका और मोजाम्बिक की यात्रा सम्पन्न
- 11वें एशिया–यूरोप बैठक सम्मेलन में उलानबटोर घोषणा-पत्र जारी किया गया

31 | खेल खिलाड़ी

- विराट कोहली वेस्टइंडीज में पहली पारी में टेस्ट शतक लगाने वाले पहले भारतीय कप्तान बने
- अन्नू रानी ने जेवलिन थ्रो में राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया
- अर्जेन्टीना महिला टीम ने 7वीं बार चैम्पियंस हॉकी खिताब जीता
- पैरा–तैराक निरंजन मुकुन्दन ने आई–डब्ल्यूएस विश्व खेलों में आठ पदक जीते

35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

39 | आर्थिक लेख–इंटरनेट बैंकिंग के बढ़ते कदम
40 | कैरियर लेख–10वीं के बाद क्या करें ?
86 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
88 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक–77 का परिणाम
89 | रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

42 उत्तर प्रदेश चकबन्दी लेखपाल भर्ती परीक्षा, 2015
53 उत्तराखण्ड समूह 'ग' ग्राम पंचायत विकास अधिकारी परीक्षा, 2016
58 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग विधान भवन रक्षक/अग्नि रक्षक/वन जीव रक्षक/वन रक्षक परीक्षा, 2015
68 उत्तराखण्ड कनिष्ठ सहायक व आशुलिपिक टंकक समूह 'घ' परीक्षा, 2016
73 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग, कनिष्ठ सहायक/आशुलिपिक/वैयक्तिक सहायक परीक्षा, 2016
78 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक प्रोबेशनरी ऑफीसर्स/मैनेजमेंट ट्रेनी प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे–इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी **'सक्सेस मिरर'** की नहीं है.

➲ **सम्पादक** : महेन्द्र जैन
➲ **रजिस्टर्ड ऑफिस** : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2
➲ **सम्पादकीय ऑफिस**
1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
आगरा–मथुरा बाईपास, आगरा–282 005
फोन– 4053333, 2531101, 2530966
फैक्स– (0562) 4053330
ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdgroup.in
कस्टोमर केयर: care@pdgroup.in

➲ **दिल्ली ऑफिस**
4845, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली–110 002
फोन– 011-23251844/66

➲ **पटना ऑफिस**
पारस भवन (प्रथम तल),
खजांची रोड,
पटना– 800 004
फोन– 0612-2673340
मो– 09334137572

➲ **कोलकाता ऑफिस**
28, चौधरी लेन, श्याम बाजार
कोलकाता– 700 004
फोन– 033-25551510
मो– 07439359515

➲ **हैदराबाद ऑफिस**
1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स
बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद–500 044
फोन– 040-66753330
मो– 09391487283

➲ **हल्द्वानी ऑफिस**
8-310/1, ए. के. हाउस
हीरानगर, हल्द्वानी,
जिला–नैनीताल– 263 139
(उत्तराखण्ड)
मो– 07060421008

➲ **इन्दौर**
63-64, कैलाश मार्ग,
ग्राउण्ड फ्लोर,
श्रीजी एवेन्यू, मलहारगंज,
इन्दौर– 452 002 (म.प्र.)

➲ **लखनऊ ऑफिस**
B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर
टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवइंया,
लखनऊ– 226 004
फोन– 0522-4109080
मो– 09760181118

➲ **नागपुर ऑफिस**
1461, जूनी शुक्रवारी,
सक्करदरा रोड, हनुमान
मन्दिर के सामने,
नागपुर–440 009 (महाराष्ट्र)
फोन– 0712-6564222
मो– 09370877776

क्वांटम फिज़िक्स के अनुसार इस ब्रह्माण्ड का अस्तित्व हमारे मस्तिष्क में है. जैसा-जैसा हम सोचते हैं *Spacetime* में यानि समयाकाश में वैसी-वैसी घटनाएं बननी प्रारम्भ हो जाती हैं. प्रत्येक कार्य की उत्पत्ति पहले विचार में होती है. विचार ही किसी दिन वाणी और आचरण के स्तर पर पहुँचता है. विचार करने को जैन सूत्रों में 'आरम्भ' करना कहा गया है. जैन सूत्र क्रिया के तीन स्तर बताते हैं—

(1) आरम्भ (*Inception*)

(2) समारम्भ

(3) समरम्भ

सबसे पहले हम भाव-विचार प्रसारित करते हैं ये भाव ही इस सृष्टि का, सम्पूर्ण जनन प्रक्रिया का प्राथमिक कारण है, अगर कोई कार्य भाव-विचार में नहीं आया है, तो वह भौतिक स्तर पर कभी भी नहीं आएगा. विचारों में कार्य का उत्पन्न होना 'आरम्भ' है, आरम्भ के बाद हम अपने विचारों के अनुरूप साधन जुटाना प्रारम्भ कर देते हैं. साधनों का जुटाना सम् आरम्भ अर्थात् समारम्भ है. समारम्भ यानि आरम्भ की उत्कृष्टता है. जैसे भवन निर्माण की इच्छा जाग्रत हुई—यह आरम्भ है, यह कार्य का बीज है. विचार इच्छाओं के रूप में आकार ले रहे हैं. फिर हमने उस इच्छा के प्रभाव में आकर अनेक भवनों को देखना प्रारम्भ किया. वास्तु-निरीक्षण, भूमि-निरीक्षण, संसाधन निरीक्षण की प्रक्रिया 'समारम्भ' कहलाती है और तत्पश्चात् घटना जब आकार लेती है तब दुनिया को दिखलाई पड़ती है, किन्तु जब वह विचारों में होती है, तब स्वयं को ही पता रहता है. हम विचारों को बदल कर घटनाओं को बदल भी सकते हैं.

जब एक बालक पैदा होता है तब वह धरती पर आने से पहले माँ के 'कल्प' (*Intent*) में आता है. जब आप डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट, सिविल अधिकारी या राजनेता बनते हैं, तो ज़रा गौर कीजिए आपने यह अवस्था पाने का संकल्प ही तो किया था. आपका संकल्प ही सृजन करता है. ऋग्वेद में कहा गया है कि ब्रह्मा के विचारों ने, संकल्पों ने इस ब्रह्माण्ड को पैदा किया. ब्रह्मा के भीतर यह भाव जागा कि—'एकोऽहं बहुस्यामः ।' मैं अकेला हूँ बहुत हो जाऊँ और इसी भाव ने सृष्टि में विविध आकारों को जन्म देना शुरू कर दिया. जैन दर्शन और गीता दर्शन का गहन अध्ययन हमें यह बताता है कि हमारी आत्मा ही ब्रह्मा है. हम अपने ही भावों से अपनी स्थितियों का निर्माण करते हैं. हम जैसा-जैसा सोचते हैं, वैसे-वैसे बनते जाते हैं. यह सोच ही कर्म का रूप लेती है. हमारी सोच ही वस्तुतः हमारा कर्म है. इसीलिए कहा गया है कि 'जैसा सोचोगे वैसा बनोगे' (*As you think, you become*)

हमारी वैचारिक अवस्थाएं ही व्यक्त होती हैं तब वाणी और कार्यप्रणाली का रूप

> *If there is Universe it is only the mind of the Man.*
>
> ***—Quantum Physics***

ग्रहण करती है. विचार सूक्ष्म है, वाणी स्थूल और कर्म और अधिक स्थूल. विचार अदृश्य है, किन्तु सम्पूर्ण दृश्य जगत् को पैदा कर देते हैं. आज तक का जितना भी भौतिक विकास हम देख रहे हैं यह सारा भौतिक जगत् हमारे मानसिक जगत् का ही प्रोजेक्शन है. हमारे मन ने ही सबका निर्माण किया है इसीलिए तो आद्यगुरु शंकराचार्य ने कहा कि 'ब्रह्मसत्यं जगत्मिथ्या ।' अर्थात् हमारा ब्रह्म, भाव, यह आत्मा सत्य है शेष जगत् मिथ्या है अर्थात् वास्तविक नहीं है. हमारा होनापन सत्य है, किन्तु विचारों से दिखलाई पड़ने वाली यह जगती सबके भिन्न-भिन्न विचारों के अनुरूप है. इसीलिए तो किसी के लिए यह दुनिया स्वर्ग तुल्य है, तो किसी के लिए नर्कतुल्य. किसी को सुख प्रतीत होता है तो किसी अन्य को दुःख है, सुख-दुःख हमारे विचारों की सकारात्मकता व नकारात्मकता में निहित है. हकीकत में तो न सुख है, न दुःख है, बस जो जैसा है, वैसा है, किन्तु हम हकीकत को नहीं जीते, हम सब अपने-अपने विचारों को जीते हैं. जब एक माँ ने अपनी संतान को संन्यासी बनाना चाहा, तो उसने बचपन से ही अपने बालक में ये विचार डालने शुरू कर दिए कि—

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनो ऽसि ।
संसार माया परिवर्जितो ऽसि,
संसार स्वप्नं त्यज मोहनिद्रा
मदालसा वाचमुवाच पुत्रम् ॥